• कविताएं...

## पवन...

*मनुष्य के कण्ठ से*
*पहला शब्द फूटा*
*तो उसे*
*पेड़ पक्षी पर्वत झील*
*झरने और समुद्र के हृदय तकने*
*पहुंचाया पवन ने।*
*मनुष्य ने फूंका शंख*
*तो पवन ने*
*उसे नाद दी।*
*बनाया ढोल-मृदंग*
*तो थाप दी।*
*पवन ने दिशा दी*
*उस पहले तीर को*
*जिसे मनुष्य ने*
*सिरजते ही*
*छोड़ दिया था शून्य में।*
*मनुष्य की राह*
*लम्बी होती गई*
*थकान से टूटने लगा वह*
*तो पवन ने उसे*
*घोड़े पर बैठाया*
*जिसकी टापों की गूंज में*
*दर्ज है*
*मनुष्य की सुदीर्घ गाथा।*
*मनुष्य ने*
*आसमान में उड़ने*
*यान की कल्पना की*
*तो पवन उसे*
*पीठ पर साजा।*
*सोचा चांद पर जाने की*
*मंगल तो*
*जीवन बीज ढूंढ़ लाने की*
*तो वह*
*हंसी-खुशी घुमा लाया।*
*सड़क पर गतिमान*
*तुम्हारी हमारी साईकल को*
*पवन की दरकार*
*पवन के लाड़-दुलार से*
*घूमती है*
*हमारे बच्चों की फिरकनी*
*थिरकती है कठपुतली*
*पवन की तरंग को*
*इधर खूब साधा है हमने*
*अभी-अभी मैंने घर बैठे ही*
*सुदूर बस्तर के*
*अपने कवि मित्र से*
*बात की*
*उसके सुख दुख को जाना ।*
*बस एक बटन दबाया*
*और स्वयं को विश्व-ग्राम में*
*बड़ा पाया।*
*मनुष्य के पत्थर बन जाने में*
*कोई बहुत वक्त नहीं लगता*
*यह सिर्फ पवन जानता है*
*जो हमारी सांसो को*
*नम रखता*
*और जीवन की जड़ मे*
*रंग-गंध सींचता है ।*

■ रजत कृष्ण

• कहानी/-आरके नारायण

# कितनी पूर्णता

सोम को यह सोचकर अच्छा लग रहा था कि उसकी पाँच साल की मेहनत अब पूरी हो रही है। उसने अपने जीवन में बहुत-सी मूर्तियां बनाई थीं लेकिन इतना बड़ा काम कभी नहीं किया था। वह अक्सर अपने से कहता था कि उसकी बनाई नटराज की यह प्रतिमा प्रलय के बाद भी अपने स्थान पर खड़ी रहेगी।

लेकिन किसी ने इस मूर्ति को अब तक देखा नहीं था। सोम कमरे के सब दरवाजे और खिड़कियाँ बंद करके एक छोटे से दीये की रोशनी में इस मूर्ति पर काम करता था, भले ही बाहर उस समय सूरज चमक रहा हो। इसलिए वह हर समय पसीने में नहाया रहता था, लेकिन मूर्ति को लोगों की नजरों से बचाये रखने के लिए उसने यह भी स्वीकार कर लिया था। वह बहुत ध्यानमग्न होकर इस पर काम करता था और किसी से भी इसके विषय में बात नहीं करता था।

परंतु अब उसका श्रम समाप्त होने को आया था। वह रुका, माथे से बह रहा पसीना पोंछा और बहुत संतोषपूर्वक मूर्ति की ओर देखने लगा। वह इसकी गरिमा से प्रभावित हो उठा। उसके सामने दंडवत् होकर प्रार्थना करने लगा 'देवाय, आपको बनाने में मैंने पाँच वर्ष लगाये हैं। अब आप मंदिर में स्थान ग्रहण करें और मानव मात्र को आशीर्वाद दें।' मिट्टी के दीये की लौ मूर्ति पर गिर रही थी और उसमें दृश्यमान लहरें उत्पन्न कर रही थी। मूर्तिकार दर्शन के गहन-भाव में खो-सा गया। किसी ने कहा, 'मित्र, प्रतिमा को बाहर मत ले जाना। यह बहुत ही पूर्ण है...।' यह सुनकर सोम भय से काँपने-सा लगा। उसने कमरे में नजर घुमाई। एक अंधेरे कोने में कोई बैठा था-एक आदमी था। उसे देखकर सोम तेजी से आगे बढ़ा और उसकी गर्दन पकड़ ली। 'तुम यहाँ क्यों आये?' आदमी दर्द से काँपता हुआ बोला, 'मैं तुम्हारा प्रशंसक हूँ। मैंने हमेशा तुम्हारे काम को सराहा है। पांच वर्ष तक प्रतीक्षा करता रहा हूँ...।'

'लेकिन तुम यहाँ आये कैसे?'

'जब तुम भोजन कर रहे थे, दूसरी चाबी से मैं भीतर आ गया...।'

सोम ने दाँत पीसे। मैं तुम्हारा गला घोंट, और देवता को बलि चढ़ा दूँ?'

'जो चाहो, करो,' उसने उत्तर दिया। यदि इससे तुम्हें लाभ हो... लेकिन मुझे संदेह है। 'बलि देकर भी तुम इसे यहाँ से हटा नहीं सकोगे। यह बहुत ही पूर्ण है। इतनी पूर्णता मनुष्यों को प्राप्त नहीं होती।'

यह सुनकर मूर्तिकार रोने को हुआ। 'ऐसा मत है। इसी पूर्णता के लिए मैंने गुप्त होकर काम किया है। यह हमारे लोगों के लिए बनी है। यह ईश्वर की तरह उनके बीच रहेगी। उन्हें इससे वंचित मत करो।'

दूसरा मूर्ति के सामने झुक आया और बोला, 'हे देव, हमें अपनी उपस्थिति सहन करने की शक्ति दो...।'

इस व्यक्ति ने लोगों को मूर्ति के बारे में बताया और यह रहस्य सबको ज्ञात हो गया। एक शुभ दिन सोम मंदिर के पुजारी के पास गया और बोला, 'अगली पूर्णिमा को मेरे नटराज की मंदिर में स्थापना करना। आपने उनके लिए स्थान बनाया है?'

पुजारी ने उत्तर दिया, 'मुझे पहले प्रतिमा को दिखाओ।' वह मूर्तिकार के घर गया, प्रतिमा को देखा

**दूसरे दिन उसने कमरे की एक दीवार तोड़ी और वहाँ एक बड़ा फाटक बना दिया, जो सड़क पर खुलता था। फिर उसने गाँव में मुनादी करने वाले राम को बुलाया।**

**उसे एक रुपया दिया और गाँवों में घूम-घूमकर मुनादी करने को कहा कि अगली पूर्णिमा को नटराज की प्रतिष्ठा होगी। अगर भीड़ अच्छी हुई तो वह उसे एक शाल भेंट करेगा...**

और बोला, 'यह पूर्णता, यह देवता, मनुष्य के देखने के लिए नहीं है। यह हमें अंधा कर देगी। इसके समक्ष प्रार्थना करते ही यह नृत्य करने लगेगी... और हम सब नष्ट होने लगेंगे...।'

यह सुनकर मूर्तिकार दुखी हुआ तो पुजारी ने कहा, 'छेनी उठाओ और कहीं से इसे जरा-सा तोड़ दो... अंगूठा या कुछ और... फिर यह सुरक्षित हो जायेगी।'

मूर्तिकार ने उत्तर दिया कि पहले वह यह सुझाव देने वाले का सिर तोड़ देगा।

गाँव से प्रमुख नागरिक आये और कहने लगे, 'हमें गलत मत समझना। मंदिर में हम इस मूर्ति को स्थान नहीं दे सकेंगे। गुस्सा मत करना... हमें गाँव के सब लोगों का हित देखना है। तुम अगर एक उँगली का जरा-सा हिस्सा भी तोड़ सको...।'

सोम चिल्लाया, 'निकलो, यहाँ से तुम सब निकल जाओ। मैं तुम्हारे मंदिर में इस नटराज को बिलकुल रखना नहीं चाहता। मैं उसके लिए, जहाँ वह है, वहीं मंदिर बना दूंगा। फिर तुम देखोगे कि वही मंदिर दुनिया का सबसे बड़ा मंदिर हो जायेगा....

दूसरे दिन उसने कमरे की एक दीवार तोड़ी और वहाँ एक बड़ा फाटक बना दिया, जो सड़क पर खुलता था। फिर उसने गाँव में मुनादी करने वाले राम को बुलाया। उसे एक रुपया दिया और गाँवों में घूम-घूमकर मुनादी करने को कहा कि अगली पूर्णिमा को नटराज की प्रतिष्ठा होगी। अगर भीड़ अच्छी हुई तो वह उसे एक शाल भेंट करेगा।

पूर्णिमा के दिन आसपास के गाँवों से वहाँ स्त्री-पुरुष और बच्चों की भीड़ जमा होने लगी और एक इंच खाली जगह भी नहीं बची। चारों तरफ की सड़कें लोगों से भर गईं। फूल और खिलौने बेचने वाले चिल्ला-चिल्लाकर अपनी चीजें बेचने लगे।

बाजे बजाने वाले और गायक घूम-घूमकर गाने सुनाने लगे। लोग एक-दूसरे से मिलने और बच्चे खेलने-कूदने लगे, चारों ओर शोर-शराबे का माहौल हो गया। फूलों और अगरबत्तियों की खुशबू वातावरण में गमक उठी। इस सबके ऊपर, उस समय तक का सबसे शानदार चाँद चमक रहा था।

प्रतिमा पर जो चादर पड़ी थी, उसे उठा दिया गया। बहुत से कपूर से उसकी आरती की जाने लगी और शंख बजने लगे। घंटियों की आवाज से वातावरण गूंज उठा। भीड़ पर शान्ति छा गई। हर नेत्र प्रतिमा को देखने लगा। कपूर की लौ ऊपर उठी और नटराज के नेत्र खुले, अंग फड़के और पैरों के घुंघरू बजे। एक पैर जमीन पर रखा और दूसरा नृत्य की मुद्रा में ऊपर उठाया। अपनी एड़ी के नीचे की दुनिया को उसने नष्ट करना शुरू किया और उसकी राख को बदन पर लगाकर हाथ में मृदंग उठाकर देवता ने उस पर थाप देना शुरू किया। मृदंग की ध्वनि में दुनिया नष्ट होने लगी, नष्ट होने के बाद फिर बनने लगी, फिर नाश और निर्माण का चक्र आरंभ हो गया... घंटियों की ध्वनि तेज होती जा रही थी। भीड़ आँखें फाड़े इस अद्भुत दृश्य को देख रही थी।

इसी क्षण पूर्व दिशा से हवा का तेज झोंका आया। चंद्रमा की रोशनी कम होने लगी। हवा तूफान में बदलने लगी, बादल घिर आये और उन्होंने चंद्रमा को चारों ओर से ढंक लिया। घना अंधकार छा गया। बिजली कड़कने लगी, आसमान गरजने लगा और चारों दिशाओं से आग बरसने लगी। जमीन पर जगह-जगह रखे पुआल के ढेरों में आग लग गई और उसकी रोशनी गाँव भर में फैल गई।

लोग इधर-उधर भाग कर शरण लेने लगे। तभी बिजली की एक कड़क एक घर तक जा पहुँची। उससे निकली आग आसमान में उठने लगी और सारा आसमान रोशनी से भर उठा। दस गाँवों के लोग इस एक गाँव में जमा थे। एक और कड़क एक दूसरे मकान में जा पहुँची। स्त्री और बच्चे चीखने और चिल्लाने लगे। तभी बारिश की एक रौ आई और आग सूं-सूं की आवाजें करती बुझने लगी। बारिश तेज होकर घनघोर वर्षा में बदल गई। गाँव के दो तालाब, जिनके बगल से होकर सड़क जाती थी, जल से भर गये और पानी सड़कों पर बहने लगा। तूफान की हवा चीख रही थी और पेड़ों तथा मकानों को नष्ट कर रही थी। लोग कहने लगे, 'प्रलय का दिन आ गया है।'

दूसरे दिन भी पानी निरंतर बरसता रहा। सोम प्रतिमा के आगे सिर झुकाए बैठा सोचता रहा। फूल-पत्ती और उपहार की सामग्रियाँ जमीन पर बिखरी पड़ी थीं। उन सबमें जल भर गया था। कुछ लोग तैरते हुए उसके पास आये और पूछने लगे, 'अब तुम संतुष्ट हुए?' राक्षसों की तरह वे उसके सामने खड़े थे और पूछ रहे थे कि देख लिया अपने कार्य का परिणाम!

-जारी

• शायरी...

*हंसी हंसी में हर इक ग़म छुपाने आते हैं*
*हसीन शेर हमें भी सुनाने आते हैं*
*हमारे दम से ही आबाद हैं गली-कूचे*
*छतों पे हम ही कबूतर उड़ाने आते हैं*

◆◆◆

*दरीचा खोल दिया था तिरे ख़यालों का*
*हवा के झोंके अभी तक सुहाने आते हैं*
*विसाल हिज्र वफ़ा फ़िक्र दर्द मजबूरी*
*ज़रा सी उम्र में कितने ज़माने आते हैं*
*हसीन ख्वाबों से मिलने को पहले सोते थे*
*कि अब तो ख्वाब भी नींदें उड़ाने आते हैं*
*'रईस' खिड़कियां सारी न खोलिए घर की*
*हवा के झोंके दिए भी बुझाने आते हैं*

-रईस सिद्दीकी

◆◆◆

*जाने किस चाह के किस प्यार के गुन गाते हो*
*रात दिन कौन से दिल-दार के गुन गाते हो*
*ये तो देखों के तुम्हें लूट लिया है उस ने*
*इक तबस्सुम पे ख़रीदार के गुन गाते हो*

-ऐतबार साज़िद

• जवाब आए नहीं...

*सवाल गूंज के चुप हैं जवाब आए नहीं*
*जो आने वाले थे वो इंक़लाब आए नहीं*
*ये क्या हज़र कि सफ़र की ज़रूरतें ही न हों*
*ये क्या सफ़र कि कहीं पर सराब आए नहीं*
*वो एक नींद की जो शर्त थी अधूरी रही*
*हमारी जागती आंखों में ख्वाब आए नहीं*
*दुआ करो कि ख़िज़ां में ही चंद फूल खिलें*
*कि अब के मौसम-ए-गुल में गुलाब आए नहीं*
*मुझे तो आज के कर्ब-ओ-बला से फ़ुर्सत कब*
*तुम उन की चाप सुनो जो अज़ाब आए नहीं*

-राशिद जमाल